# विषयसूची

## क्षेत्रस्कन्धः प्रथमः


| अध्याय | विषय | श्लोक संख्या | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| १. | मुनिप्रश्न | १-५५ | १ |
| २. | विषयानुक्रमणिका | १-८२ | ६ |
| ३. | ईश्वरसाक्षात्कार | १-६७ | १४ |
| ४. | मार्कण्डेय-शंकर संवाद | १-७३ | २० |
| ५. | मधु-कैटभवध | १-४० | २८ |
| ६. | देवीद्वीप प्रवेश | १-६० | ३२ |
| ७. | | १-५१ | ३७ |
| ८. | ब्रह्मा-विष्णु-रुद्र यांना मन्त्रोपदेश | १-१०८ | ४३ |
| ९. | मुनींना मार्तण्डभैरव दर्शन | १-३८ | ५४ |
| १०. | क्षेत्रनिर्माण | १-८५ | ५८ |
| ११. | सावित्री गणेशस्कन्धान्तर्गत शिवक्षेत्र वर्णन | १-६४ | ६७ |
| १२. | क्षेत्रप्रशंसा आणि सावित्री अष्टोत्तरशतक्षेत्रवर्णन | १-४७ | ७४ |
| १३. | विष्णु अष्टोत्तरगत क्षेत्रवर्णन | १-४० | ७८ |
| १४. | मन्दाकिनी-पाप विमोचन | १-७५ | ८२ |
| १५. | भीमरथी-काकिनी संयोग | १-९७ | ८९ |
| १६. | हनुगुष्ठादि क्षेत्रवर्णन | १-५४ | ९८ |
| १७. | क्षीराब्धि-हिमवत्-कृतस्तोत्रं | १-४१ | १०३ |
| १८. | क्षीराब्धि — हिमवत्सोपदेश | १-४४ | १०७ |
| १९. | दत्तात्रेयावतार | १-४२ | ११२ |
| २० | विष्णु द्वारा स्वयं नारद-पर्वत आदींच्या शापाची स्वीकारोक्ति आणि अम्बरीष निरसन | १-९८ | ११६ |
| २१. | नारायण चन्द्रामा विवाह योग | १-६३ | १२५ |
| २२. | टिटवीरक्षणार्थ गरुड आगमन | १-५० | १३० |

| अध्याय | विषय | श्लोक संख्या | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| २३. | | १-४९ | १३५ |
| २४. | नर-नारायण-तप विघ्नारम्भ | १-५९ | १४० |
| २५. | नर-नारायण क्षमावाप्ति | १-५१ | १४६ |
| २६. | प्रह्लादाची अहोबिल क्षेत्रप्राप्ति | १-६१ | १५२ |
| २७. | नारायण मुनींचे सन्नतिक्षेत्री आगमन | १-६६ | १५८ |
| २८. | देवासुर युद्ध | १-२१ | १६४ |
| २९. | काण्यमाता वध | १-५० | १६७ |
| ३०. | शुक्राचार्य (काण्य) यांची विद्याप्राप्ती | १-४९ | १७२ |
| ३१. | दैत्यांना शुक्रशापप्राप्ती | १-३४ | १७७ |
| ३२. | असुरांचे पातालगमन | १-३२ | १८० |


## सेतुस्कन्धः द्वितीयः


| | | | |
|---|---|---|---|
| १. | पुरन्दर (इन्द्र) 'इन्दुलीला | १-६२ | १८४ |
| २. | सेतुराज उत्पत्ति | १-५१ | १९० |
| ३. | सेतुराज तपश्चर्या आरंभ | १-५० | १९५ |
| ४. | सेतुराज तपश्चर्या | १-५३ | २०० |
| ५. | सेतुराज दिग्विजय | १-३५ | २०५ |
| ६. | सेतुराज दिग्विजय व भीमकेतु पराजय | १-५९ | २०८ |
| ७. | सेतुराज-दिग्विजय | १-५३ | २१३ |
| ८. | श्रुतयश आदिंचा पराजय | १-५५ | २१८ |
| ९. | सेतुराजाचा सार्वदेशिक विजय | १-५८ | २२४ |
| १०. | सेतुराज दिग्विजयामध्ये अष्ट दिक्पाल विजय | १-५५ | २२९ |
| ११. | सेतुराजवध उपाय योजना | १-३८ | २३४ |
| १२. | सेतुमृगविहार | १-३६ | २३८ |
| १३. | नारायणभार्या अपहरण | १-६९ | २४२ |
| १४. | सेतुराजवध प्रयत्न | १-५१ | २४९ |
| १५. | श्रीनारायण मुनींची तपश्चर्या | १-३९ | २५४ |
| १६. | भ्रामरी महिमा | १-६३ | २५९ |

| अध्याय | विषय | श्लोक संख्या | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| १७. | पञ्चभ्रमरांचा प्रराक्रम | १-५८ | २६५ |
| १८. | अस्त्र-प्रयोग | १-५९ | २७१ |
| १९. | सेतुराजवधपूर्वक नारायण मुनींना पत्नी (पुन: प्राप्ति) लाभ | १-५२ | २७७ |
| २० | भ्रमरांना उपसंहारपूर्वक देवीचा आशिर्वाद | १-६० | २८२ |
| २१. | विश्वरुप संयोग | १-३० | २८७ |
| २२. | जगदम्बा सहस्त्रनाम | १-२४७ | २९१ |


## भ्रामरस्कन्ध: तृतीय:


| | | | |
|---|---|---|---|
| १. | भ्रमरवासना | १-४१ | ३३१ |
| २. | उतथ्याची कथा | १-४७ | ३३५ |
| ३. | सत्यव्रत सर्वज्ञान प्राप्ति | १-४६ | ३४१ |
| ४. | युधाजित-वीरसेन युद्ध | १-५२ | ३४६ |
| ५. | मनोरमेचा पुत्रासमवेत वनवास | १-५७ | ३५२ |
| ६. | युधाजितचे भारद्वाज आश्रमी आगमन | १-६३ | ३५८ |
| ७. | काशिराज कन्येला कामराज-बीज-सुदर्शन प्रेमानुराग | १-४२ | ३६५ |
| ८. | शशिकला स्वयंवर | १-६२ | ३७० |
| ९. | सुदर्शनाचे स्वयंवर गमन | १-५६ | ३७६ |
| १०. | राजकुमार सुदर्शन, राजा सुबाहु व शशिकला संवाद | १-५७ | ३८२ |
| ११. | सुदर्शन वाङ्निश्चय | १-५९ | ३८८ |
| १२. | शशिकला-सुदर्शन विवाह | १-४३ | ३९५ |
| १३. | सुदर्शनजय | १-५९ | ४०१ |
| १४. | सुदर्शनाचे दुर्गा वर प्राप्ती करुन आपल्या राज्यात आगमन | १-६९ | ४०६ |
| १५. | | १-५६ | ४१४ |
| १६. | | १-६७ | ४२० |
| १७. | मदालसा कुवलयाश्व विवाह | १-८१ | ४२७ |
| १८. | क्रतुध्वज (कुवलयाश्व) मदालसा वियोग | १-७८ | ४३६ |
| १९. | मदालसा पुनरुभ्दव | १-५७ | ४४४ |
| २० | क्रतुध्वजा द्वारा अश्वतर-कम्बल दर्शन | १-४७ | ४५० |

| अध्याय | विषय | श्लोक संख्या | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| २१. | कुवलयाश्व मदालसा पुनर्भेट | १-४५ | ४५५ |
| २२. | मदालसेच्या पुत्रास ज्ञानोपदेश | १-७४ | ४६० |
| २३. | शुंभ-निशुंभाचे दिग्पालजयपूर्व इन्द्रप्राप्ति | १-५३ | ४६९ |
| २४. | देवतांना परमेश्वरप्रसाद | १-३६ | ४७४ |
| २५. | देवी-दूत संवाद | १-५४ | ४७८ |
| २६. | धूम्रलोचन भाषण | १-६० | ४८४ |
| २७. | धूम्रलोचन वध | १-५९ | ४९० |
| २८. | चण्ड-मुण्ड वध | १-६६ | ४९७ |
| २९. | रक्तबीजाचे युद्धासाठी गमन | १-६२ | ५०३ |
| ३०. | मातृकांचे युद्ध | १-६२ | ५१० |
| ३१. | रक्तबीज-वध | १-५४ | ५१६ |
| ३२. | निशुंभ-वध | १-६० | ५२२ |
| ३३. | शुंभ-वध | १-७१ | ५२९ |
| ३४. | महिषासुर उत्पत्तिपूर्वक इन्द्रजयोद्योग कथानक | १-८७ | ५३६ |
| ३५. | इन्द्र कार्य-विचार कथन | १-५१ | ५४५ |
| ३६. | चिक्षुरादि असुर युद्ध | १-५१ | ५५० |
| ३७. | महिषासुर विजय | १-६२ | ५५६ |
| ३८. | देवतांचे विष्णुलोकी गमन | १-३१ | ५६२ |
| ३९. | देवतांचे सन्नतिक्षेत्री गमन | १-३१ | ५६५ |
| ४०. | देवीचे प्रकटन | १-८७ | ५६९ |
| ४१. | देवी आणि मन्त्री संवाद | १-५८ | ५७८ |
| ४२. | दैत्याचे देवी निकट आगमन | १-६३ | ५८४ |
| ४३. | दैत्य ताम्र परतल्यावर महिषाग्रची मंत्र्यांबरोबर मसलत | १-६१ | ५९१ |
| ४४. | वाष्कल-दुर्मुख वध | १-४५ | ५९७ |
| ४५. | चिक्षुर आणि ताम्र दैत्यांचा वध | १-५१ | ६०२ |
| ४६. | असिलोमा आणि बिडाल दैत्यांचा वध | १-४८ | ६०८ |
| ४७. | महिषासुराचे कथन | १-७२ | ६१३ |
| ४८. | महिषासुर-वध | १-५१ | ६२१ |

| अध्याय | विषय | श्लोक संख्या | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| ४९. | देवी (चन्द्रला)च्या एकशे आठ नामांचे वर्णन | १-१०८ | ६२६ |
| ५०. | पञ्चाशिका स्तवन | १-५३ | ६३९ |
| ५१. | पञ्चब्रह्मादिस्तवन | १-५७ | ६५२ |
| ५२. | प्रलयक्रम | १-७५ | ६६० |
| ५३. | शिवनृत्यवर्णन | १-७६ | ६६८ |


## उपासनास्कन्धः चतुर्थः


| | | | |
|---|---|---|---|
| १. | चन्द्रला मन्त्रोच्चार कथन | १-९७ | ६७८ |
| २. | बिल्व (बेल) प्रशंसा आणि श्रीसूक्तादिविधी | १-५८ | ६८९ |
| ३. | हरिद्राग्रहणविधि | १-२७ | ६९६ |
| ४. | कवच कथन | १-५२ | ६९९ |
| ५. | ब्राह्ममुहूर्त कर्तव्यपूर्व शौच-दन्त धावन विधि | १-६१ | ७०५ |
| ६. | स्नान-त्रिपुण्ड्र विधि | १-९७ | ७१२ |
| ७. | संध्या-विधि | १-९५ | ७२३ |
| ८. | मैलारसूर्याराधन | १-५६ | ७३२ |
| ९. | पूजा-उपकरण लक्षण कथन | १-९९ | ७३८ |
| १०. | पात्र आसनादि कथन | १-६३ | ७४९ |
| ११. | भूत शुद्धि कथन | १-७० | ७५६ |
| १२. | न्यासविधि | १-८५ | ७६४ |
| १३. | धेनु मुद्रा विधानादि कथन | १-७८ | ७७३ |
| १४. | पीठपूजा कथन | १-१०६ | ७८० |
| १५. | आवरण देवता अर्चन | १-१२९ | ७९२ |
| १६. | धूपादिराजोपचारान्त कथन | १-९२ | ८०५ |
| १७. | अडतिस-कलास्तोत्र कथन | १-५५ | ८१५ |
| १८. | होमादि कथन | १-४१ | ८२३ |
| १९. | पूजाफलोक्ति | १-३५ | ८२७ |
| २०. | स्नानविशेष पुण्यविशेषादि पूजाफल निरुपण | १-७२ | ८३० |
| २१. | पुण्यविशेषादि कथन | १-३७ | ८३७ |

## तीर्थस्कन्धः पञ्चमः


| अध्याय | विषय | श्लोक संख्या | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| १. | देवक उपाख्यान | १-७९ | ८४२ |
| २. | आदित्य तीर्थादि पासून गायत्री पर्यन्त तीर्थांचे वर्णन | १-८३ | ८५१ |
| ३. | | १-८८ | ८५९ |
| ४. | सप्तर्षी तीर्थापासून नारायण तीर्थापर्यन्त तीर्थांची प्रशंसा | १-८३ | ८६८ |
| ५. | विश्वामित्रदिति तीर्थापासून द्रौपदी तीर्था पर्यन्त तीर्थांचे माहात्म्य कथन | १-९२ | ८७६ |
| ६. | मेनका-कण्डुमुनि-तीर्थ-माहात्म्य निरुपण | १-६० | ८८५ |
| ७. | गरुड चक्र-मानव तीर्थ माहात्म्य | १-७० | ८९१ |
| ८. | लीलाकार तीर्थादि पासून मालिनी तीर्थापर्यन्त तीर्थांचे माहात्म्य | १-६९ | ८९९ |
| ९. | नल तीर्थादि-सावित्री तीर्थान्त महिमा | १-८८ | ९०६ |
| १०. | नवग्रहतीर्थादि-कल्पतीर्थान्त माहात्म्य कथन | १-१३१ | ९१५ |
| ११. | गयतीर्थादि-ऐश्वर्यदतीर्थान्त महिमा वर्णन | १-६८ | ९२७ |
| १२. | मांकणक-अश्विनी तीर्थ वैभव वर्णन | १-५३ | ९३४ |
| १३. | श्रीचक्रात्मक तीर्थ कथन | १-८६ | ९३९ |
| १४. | अङ्घ्रिस्तव | १-३४ | ९४७ |
| १५. | योग्यांचे अनुभवनिरुपण | १-६२ | ९५२ |
| १६. | श्री चन्द्रलामाहात्म्य अध्ययन श्रवण फलश्रुति | १-७५ | ९६० |